DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO. 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

B.A PART-I (HONS) Lecture No. 11

Ref. No.................. Date 24/04/2020

5- साम्यवाद द्वारा शक्ति सिद्धान्त की अवधारणा

साम्यवादी भी एक तरह से शक्ति सिद्धान्त का समर्थन करते हैं। वो यह मानता है कि राज्य शक्तिशाली व्यक्तियों के हाथ में शक्ति विहीन व्यक्तियों का शोषण करने वाला एक माध्यम है। राज्य शोषण का साधन है। शोषक वर्ग ने राज्य के माध्यम से ही शोषित वर्ग का शोषण किया है। राज्य की उत्पत्ति शोषण के लिए हुई है। आरम्भ में स्वामी वर्ग ने दासवर्ग का शोषण करने के लिए राज्य को विकसित किया और तब से शोषण के प्रयोजन के लिए ही राज्य बना हुआ है। लेनिन ने कहा था "कहाँ, कब और किस हद तक एक राज्य का जन्म होता है, यह प्रत्यक्ष रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि कब, कहाँ और किस हद तक एक राज्य विशेष के विरोधों में सामंजस्य नहीं होता और शोषण होता रहता है।" एंजिल्स के शब्दों में "बिना बल और लौह कठोरता के इतिहास में कभी कोई सफलता नहीं मिलती।"

6. अराजकतावादी और शक्ति सिद्धान्त

व्यक्तिवाद और साम्यवाद की तरह अराजकतावादी भी राज्य के विरुद्ध हैं। अराजकतावादी तो राज्य को अनावश्यक बुराई मानता है। बाकुनिन और क्रोपाटकिन के अनुसार "राज्य एक ऐसी बुराई है जिसका मुख्य उद्देश्य श्रमिक वर्ग का शोषण करना है। इसलिए अराजकतावादी तो साम्यवादियों से आगे जाकर यह मानते हैं कि राज्य तो तुरन्त समाप्त होना चाहिए।"

टॉलस्टाय और गाँधी जी जैसे शाँति प्रिय अराजकतावादी दार्शनिक भी राज्य को शक्ति और हिंसा पर आधारित मानते थे, वे भी राज्य को समाप्त

PTO

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
B.A PART-I (HONS.)
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date.24/04/2020

करने के पक्ष में थे। उनका भी मत था कि राज्य का उदय शक्ति और हिंसा के द्वारा हुआ है।

शक्ति सिद्धान्त की आलोचना

अनेक आधारों पर शक्ति-सिद्धान्त की आलोचना की गई है। यह सिद्धान्त वास्तव में राज्य की उत्पत्ति की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं कर पाता है। इसमें अनेकों त्रुटियाँ हैं। मुख्य त्रुटियाँ अग्रलिखित हैं:-

1. एक अस्पष्ट और लचीला सिद्धान्त — शक्ति सिद्धान्त कभी तो यह कहता है कि राज्य की उत्पत्ति शक्ति के द्वारा हुई फिर कभी यह कहता है कि राज्य शक्ति के बल पर टिका हुआ है। और भी यह कहता है कि राज्य के कानूनों का आधार शक्ति है। तरह-तरह की इन व्याख्याओं से शक्ति सिद्धान्त का वास्तव में सर्वथा अस्पष्ट बन गया है। विभिन्न विचारधाराओं के प्रतिपादकों ने अपने-अपने सीमित उद्देश्यों से शक्ति के अलग-अलग रूप का गुणगान और शक्ति सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। ऐसी अवस्था में शक्ति सिद्धान्त शून्य सिद्धान्त बन जाता है।

2. अधूरा सिद्धान्त — राज्य की उत्पत्ति का शक्ति सिद्धान्त एक अधूरा सिद्धान्त है। यह सत्य है कि राज्य के विकास में शक्ति भी एक महत्वपूर्ण तत्व है परन्तु शक्ति मात्र एक तत्व नहीं है। यह सिद्धान्त पूरी तरह सत्य नहीं है केवल आंशिक रूप से ही सत्य है। अरस्तू ने कहा था कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है परन्तु यह सिद्धान्त मनुष्य के सामाजिक, मानसिक और धार्मिक आवश्यकताओं

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
B.A PART-I (HONS.)
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo - 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date.24/04/2020

की उपेक्षा करके केवल शक्ति को ही राज्य का आधार मानता है जो कि गलत है।" गिलक्राइस्ट के शब्दों में "न्याय रहित शक्ति अपने सर्वोत्तम रूप में भी केवल अत्याचार है। न्यायपूर्ण शक्ति राज्य का स्थायी आधार है।" यह एक खतरनाक सिद्धान्त है। राज्य के शक्ति सिद्धान्त पशुबल को बहुत अधिक महत्व देता है। यह सिद्धान्त मानता है कि शक्ति ही सत्य है, शक्ति ही न्याय है, शक्ति ही अन्तिम सत्ता है, शक्ति के आधार पर जो होता है वह उचित है। वास्तव में यह एक गलत और बर्बर मान्यता है क्योंकि इस सिद्धान्त के आधार पर तो बांग्लादेश की महिलाओं के साथ पाकिस्तानी सैनिकों के अत्याचार की उचित थे। इस सिद्धान्त के आधार पर तो अमेरिका की वियतनाम पर बमबारी भी उचित थी। यह एक गलत और अमानवीय सिद्धान्त है जिसके बहुत ही खतरनाक परिणाम हो सकते हैं।

शक्ति राज्य का आधार नहीं है

शक्ति सिद्धान्त के मानने वाले कहते हैं कि राज्य शक्ति के बल पर टिका हुआ है। राज्य का आधार शक्ति ही है। राज्य के कानूनों का स्रोत शक्ति ही है जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। ग्रीन ने तो स्पष्ट और अत्यन्त तार्किक भाषा में कहा था कि "राज्य का आधार शक्ति नहीं इच्छा है।" ग्रीन आगे कहते हैं कि "राज्य के निर्माण में जिन मुख्य तत्वों का हाथ होता है, उनमें मुख्य स्थान राज्य की दमनकारी शक्ति का नहीं बल्कि कानून के अनुसार शक्ति के प्रयोग द्वारा ही राज्य का स्थायी रूप बना रहता है।" इसलिए वह कहता है "Will not force is the basis of State."

(समाप्त)

Scanned with CamScanner